हिमालय के गांवों में भी पंहुचा मंगल टरबाइन

भारत डोगरा

नदी-नालों से पानी लिफ्ट करने के लिए यदि किसान चेकडैम बनाकर मंगल टरबाइन का उपयोग करें तो वे वर्षों तक बिना बिजली व डीज़ल के पानी की बहती धारा की ऊर्जा का उपयोग कर सिंचाई के लिए पानी उठा सकते हैं। इस मंगल टरबाइन के आविष्कारक मंगल सिंह ने मैदानी इलाकों में कई जगह इसका सफल प्रदर्शन पहले ही कर दिया था व अनेक विशेषज्ञों व उच्चाधिकारियों ने इसकी बहुत प्रशंसा भी की थी।

अब नई बात यह है कि कई मंज़िलें तय करते हुए मंगल टरबाइन हिमालय के गांवों तक भी पंहुच गया है। हाल ही में टिहरी गढ़वाल ज़िले; उत्तराखंड के सेंदुल गांव में पेयजल की समस्या के समाधान में मंगल टरबाइन का सफल उपयोग हुआ है। मंगल टरबाइन का उद्घाटन करते हुए उत्तराखंड के पेयजल मंत्री प्रसाद नैथानी ने कहा कि इस तकनीक से पर्वतीय गांवों की पेयजल समस्या को दूर करने का अधिक व्यापक स्तर पर प्रयास किया जाएगा।

सेंदुल गांव विख्यात पर्यावरण कार्यकर्ता सुंदरलाल बहुगुणा के नवजीवन आश्रम के पास घनसाली-सिल्यारा मार्ग पर स्थित है। सुंदरलाल बहुगुणा बहुत समय से ग्रामीण वैज्ञानिक मंगल सिंह के कार्य को प्रोत्साहित करते रहे हैं। उनका मानना है कि इससे पर्वतवासियों, विशेषकर महिलाओं के कष्ट काफी कम किए जा सकते हैं। सुंदरलाल बहुगुणा ने कहा है कि उत्तराखंड के साथ-साथ हिमाचल प्रदेश, लद्दाख आदि अन्य पर्वतीय स्थानों पर भी मंगल टरबाइन के प्रयोग होने चाहिए।

हिमालय के गांववासियों को प्रायः काफी नीचे बह रही नदियों से अपनी पेयजल व अन्य ज़रूरतों के लिए पानी भरकर लाना पड़ता है। खड़ी चढ़ाइयों पर काफी मात्रा में पानी उठाकर चढ़ना बहुत कठिन होता है। इसमें काफी समय भी चला जाता है। यदि इस पानी को लिफ्ट करने का सस्ता, सरल उपाय उपलब्ध हो जाए तो उन्हें काफी

सुविधा हो सकती है।

यह सस्ता व सरल उपाय अब मंगल टरबाइन के रूप में उपलब्ध हुआ है। सेंदुल गांव के लोग कुछ समय पहले तक बहुत नीचे बह रही बालगंगा नदी से बार-बार पानी भरने पर निर्भर थे। अब मंगल टरबाइन की सहायता से नदी का पानी लगभग 150 मीटर उठाकर गांव में लाया गया है जहां से यह लगभग सभी गांववासियों को उपलब्ध होता है। इसके लिए न तो डीज़ल की ज़रूरत है, न बिजली की। नदी की बहती धारा की ऊर्जा का उपयोग ही टरबाइन चलाने के लिए होता है।

हालांकि आरंभ में सेंदुल में स्थान का चुनाव बहुत अनुकूल नहीं हो सका था व पाइप-लाइन का खर्चा भी काफी आया है। तो भी कुल मिलाकर लगभग छः लाख रुपए की लागत पर 350 से अधिक गांववासियों को पेयजल आपूर्ति एक उपलब्धि मानी जा रही है क्योंकि अब आगे डीज़ल व बिजली की लागत बिलकुल नहीं होगी। इस परियोजना में पानी को लगभग 120 मीटर लिफ्ट किया गया है।

चूंकि उत्तराखंड के पेयजल मंत्री मंगल टरबाइन का उपयोग अन्य गांवों के पेयजल संकट के समाधान में भी करना चाहते हैं, अतः उम्मीद है कि निकट भविष्य में उत्तराखंड में मंगल टरबाइन की तकनीक का बेहतर व व्यापक उपयोग हो सकेगा। ***(स्रोत फीचर्स)***